1. संस्कारों को ऐसा शीतल बना लो जो जोश वा रोब के संस्कार इमर्ज ही न हों
2. सत्यता और निर्भयता की शक्ति साथ हो तो कोई भी कारण हिला नहीं सकता
3. बुद्धि पर किसी भी प्रकार का बोझ न हो तब कहेंगे डबल लाइट फरिश्ते
4. हर समय करावनहार बाप याद रहे तो निरन्तर योगी बन जायेंगे
5. बुद्धि का हल्कापन व महीनता ही सबसे सुन्दर पर्सनालिटी है
6. संगमयुगी मर्यादा पुरुषोत्तम बनना - यही ब्राह्मण जीवन का श्रेष्ठ लक्ष्य है।
7. दृढ़ संकल्प से हर कदम में बाप को फॉलो करने वाले ही सम्पन्न बनते हैं
8. स्वयं को ईश्वरीय मर्यादाओं के कंगन में बांध लो तो सर्व बंधन समाप्त हो जायेंगे
9. आज्ञाकारी वह है जो मनमत, परमत से मुक्त रह सदा श्रीमत पर चलता है
10. शुद्ध सकंल्पों का भोजन स्वीकार करने वाले ही सच्चे-सच्चे वैष्णव हैं
11. जिनके संस्कार इजी हैं वे कैसी भी परिस्थिति में स्वयं को मोल्ड कर लेंगे
12. ड्रामा के हर दृश्य को देख हर्षित रहो तो कभी अच्छे बुरे की आकर्षण में नहीं आयेंगे
13. दिव्यता और अलौकिकता को अपने जीवन का श्रंगार बना लो तो साधारणता समाप्त हो जायेगी
14. सम्मान मांगने के बजाए सबको सम्मान दो तो सबका सम्मान मिलता रहेगा
15. निमित्त और निमार्णचित्त बनने के लिए मन और बुद्धि को प्रभू अर्पण कर दो
16. अकाल तख्तनशीन बन अपनी श्रेष्ठ शान में रहो तो कभी परेशान नहीं होंगे
17. जो अपने श्रेष्ठ चरित्र द्वारा बापदादा तथा ब्राह्मण कुल का नाम रोशन करते हैं वही कुल दीपक हैं
18. एकाग्रता की शक्ति द्वारा रूहों का आवाहन कर रूहानी सेवा करना ही सच्ची सेवा है
19. संगमयुग पर अपने तन-मन-धन को सफल करना और सर्व खजानों को बढ़ाना ही समझदारी है
20. अपने हर संकल्प, बोल और कर्म द्वारा औरों को प्रेरणा देने वाले ही प्रेरणामूर्त हैं
21. निरन्तर ईश्वरीय सुखों का अनुभव करने वाले ही बेफिक्र बादशाह हैं
22. परिस्थितियों में घबराने के बजाए साक्षी हो जाओ तो विजयी बन जायेंगे
23. किसी भी परिस्थिति का सामना करने का साधन है-स्व स्थिति की शक्ति
24. मन और बुद्धि को एक ही पावरफुल स्थिति में स्थित करना ही एकान्तवासी बनना है
25. विस्तार को सेकण्ड में समाकर ज्ञान के सार का अनुभव कराना ही लाइट-माइट हाउस बनना है
26. मन्सा महादानी बनना है तो रूहानी स्थिति में सदा स्थित रहो
27. जो अच्छे बुरे कर्म करने वालों के प्रभाव के बंधन से मुक्त साक्षी व रहमदिल है वही तपस्वी है
28. अपने परिवर्तन द्वारा संकल्प, बोल, सम्बन्ध, सम्पर्क में सफलता प्राप्त करना ही सफलतामूर्त बनना है

29. सर्व आत्माओं प्रति शुद्ध संकल्प करना ही वरदानी मूर्त बनना है
30. सदा स्वस्थ रहना है तो आत्मिक शक्ति को बढ़ाओ
31. शुभचिंतक मणि बन, अपनी किरणों से विश्व को रोशन करते चलो
32. बुद्धि रूपी कम्प्यूटर में फुलस्टॉप की मात्रा आना माना प्रसन्नचित रहना
33. ब्राह्मण वह है जो शुद्धि और विधि पूर्वक हर कार्य करे
34. विस्तार को न देख सार को देखो और स्वयं में समा लो-यही तीव्र पुरुषार्थ है
35. परचिंतन और परदर्शन की धूल से सदा दूर रहो तो बेदाग अमूल्य हीरा बन जायेंगे
36. हर आत्मा वा प्रकृति के प्रति शुभ भावना रखना ही विश्व कल्याणकारी बनना है
37. सुखदाता बन अनेक आत्माओं को दु:ख अशान्ति से मुक्त करने की सेवा करना ही सुखदेव बनना है
38. ड्रामा के राज़ को समझ नथिंगन्यु का पाठ पक्का करने वाले ही बेफिक्र बादशाह हैं
39. याद और सेवा की शक्ति से अनेक आत्माओं पर रहम करना ही रहमदिल बनना है
40. जो बुद्धि द्वारा सदा ज्ञान रत्नों को धारण करते हैं वही सच्चे होलीहंस हैं
41. राजऋषि बनना है तो ब्राह्मण आत्माओं की दुआओं से अपनी स्थिति को निर्विघ्न बनाओ
42. अपने श्रेष्ठ वायब्रेशन से सर्व आत्माओं को सहयोग की अनुभूति कराना भी तपस्या है
43. जीवन की महानता सत्यता की शक्ति है जिससे सर्व आत्मायें स्वत: झुकती हैं
44. जो किसी भी बात में स्वयं को मोल्ड कर लेते हैं वही सर्व की दुआओं के पात्र बनते हैं
45. अनेक प्रकार के मानसिक रोगों को दूर भगाने का साधन है - साइलेन्स की शक्ति
46. जो एकनामी रहते और एकॉनामी से चलते हैं, वही प्रभू प्रिय हैं
47. सच्चे सेवाधारी वह हैं जिनकी हर नस अर्थात् संकल्प में सेवा के उमंग-उत्साह का खून भरा हुआ है
48. अडोलता के तख्त पर विराजमान हो, साक्षी दृष्टा बन पार्ट बजाने वाले ही श्रेष्ठ पार्टधारी हैं
49. हरेक की विशेषता को देखने का चश्मा सदा लगा रहे तो विशेष आत्मा बन जायेंगे
50. अपनी विशेषताओं के बीज को सर्वशक्तियों के जल से सींच कर उन्हें फलदायक बनाओ
51. बिन्दू शब्द के महत्व को जान बिन्दू बन, बिन्दू बाप को याद करना ही योगी बनना है
52. सबके प्रति दया भाव और कृपा दृष्टि रखने वाले ही महान आत्मा हैं
53. स्वयं को हर परिस्थिति में मोल्ड करने वाले ही सच्चे गोल्ड हैं
54. जो सबका आदर करते हैं वही आदर्श मूर्त बनते हैं
55. रूहाब को धारण करने वाले ही रूहानी गुलाब हैं
56. पूर्वज पन की पोजीशन पर स्थित रहो तो माया और प्रकृति के बन्धनों से मुक्त हो जायेंगे
57. जो निर्मान बनते हैं उन्हें स्वत: सर्व का मान प्राप्त होता है
58. सबसे बड़े धनवान वह हैं जिनके पास पवित्रता का सर्वश्रेष्ठ खजाना है

59. जिनके जीवन में शीतलता है वे दूसरों के जलते हुए चित्त पर विजय प्राप्त कर सकते हैं (28/2)
60. जो अपने नाम-मान और शान का त्याग कर बेहद सेवा में रहते हैं वही परोपकारी हैं
61. अपने उमंग-उत्साह के सहयोग और मीठे बोल से कमजोर को शक्तिशाली बना देना ही शुभचिंतक बनना है
62. पवित्रता की शमा चारों ओर जलाओ तो बाप को सहज देख सकेंगे
63. महान आत्माओं का परम कर्तव्य है - उपकार, दया और क्षमा
64. ज्ञानी वह है जो कारण शब्द को मर्ज कर हर बात का निवारण कर दे
65. जिम्मेवारी सम्भालते हुए सब कुछ बाप को अर्पण कर डबल लाइट रहना ही फरिश्ता बनना है
66. रमता योगी बनना है तो नॉलेज और अनुभव की डबल अथॉरिटी वाले बनो
67. खुशी के समर्थ संकल्पों की रचना करो तो तन-मन से सदा खुश रहेंगे
68. "बाबा" शब्द की डायमण्ड चाबी साथ रहे तो सर्व खजानों की अनुभूति होती रहेगी
69. कर्मयोगी बन कर्म करते भी उपराम स्थिति में रहना अर्थात् उड़ता पंछी बनना
70. शुभ भावना, शुभ कामना की गोल्डन गिफ्ट साथ हो तो किसी भी आत्मा का परिवर्तन कर सकते हो
71. अपनी शुभ भावना से हर आत्मा को दुआ देने वाले और क्षमा करने वाले ही कल्याणकारी हैं
72. अपने सन्तुष्टता की पर्सनैलिटी द्वारा अनेकों को सन्तुष्ट करना ही सन्तुष्टमणि बनना है
73. स्वयं से, सेवा से, सर्व से सन्तुष्टता का सर्टीफिकेट लो तब सिद्धि स्वरूप बनेंगे
74. बाप और सर्व की दुआओं के विमान में उड़ने वाले ही उड़ता योगी हैं
75. सफलता की चाबी द्वारा सर्व खजानों को सफल करना ही महादानी बनना है
76. अव्यक्त व कर्मातीत स्थिति का अनुभव करना है तो कथनी, करनी और रहनी को समान बनाओ
77. अपनी दृष्टि, वृत्ति और स्मृति की शक्ति से शान्ति का अनुभव कराना ही महादानी बनना है
78. आत्म-अभिमानी स्थिति का व्रत धारण कर लो तो वृत्तियाँ परिवर्तन हो जायेंगी
79. परमात्मा के गुणों और शक्तियों को स्वयं में धारण करना ही महान तपस्या है
80. एकरस पुरुषार्थ द्वारा ऊंची स्थिति बना लो तो हिमालय जैसा बड़ा पेपर भी रूई हो जायेगा
81. बाबा की मदद को कैच करना है तो बुद्धि को एकाग्र कर लो
82. अपने उमंग-उत्साह द्वारा अनेक आत्माओं का उत्साह बढ़ाना - यह सच्ची सेवा है
83. जिनके संकल्पों में एक बाबा है उनकी मन्सा सदा शक्तिशाली है
84. जो सदा ईश्वरीय विधान पर चलते हैं वही ब्रह्मा बाप समान मास्टर विधाता बनते हैं
85. हर बोल और कर्म में सच्चाई सफाई हो तो प्रभू के प्रिय रत्न बन जायेंगे
86. किसी से किनारा करके अपनी अवस्था बनाने के बजाए सर्व का सहारा बनो
87. सदा हिम्मतवान बनो और सर्व को हिम्मत दिलाओ तो परमात्म मदद मिलती रहेगी

88. एक बाप को अपना संसार बना लो तो अविनाशी प्राप्तियाँ होती रहेंगी
89. सदा बिजी रहने वाले बिजनेस मैन बनो तो कदम-कदम में पदमों की कमाई है
90. दिल साफ हो तो मुराद हांसिल होती रहेगी, सर्व प्राप्तियां स्वत: आपके समाने आयेंगी
91. राज़युक्त बन हर परिस्थिति में राज़ी रहने वाले ही ज्ञानी तू आत्मा हैं
92. दिल सदा सच्ची हो तो दिलाराम बाप की आशीर्वाद मिलती रहेगी
93. जो इस समय सब कुछ सहन करते हैं वही शहनशाह बनते हैं
94. रूहानियत में रहने का व्रत लेना ही ज्ञानी तू आत्मा बनना है
95. सुख के खाते से सम्पन्न रहो तो आपके हर कदम से सबको सुख की अनुभूति होती रहेगी
96. परमात्म ज्ञानी वह है जो सर्व बन्धनों एवं आकर्षणों से मुक्त है
97. जिन्हें किसी भी बात का गम नहीं, वही बेगमपुर के बेफिक्र बादशाह हैं।
98. स्वयं को ऐसा शक्ति स्तम्भ बनाओ जो अनेको को नई जीवन बनाने की शक्ति प्राप्त हो
99. दिल से सदा यही गाते रहो कि पाना था सो पा लिया...तो चेहरा खुशनुम: रहेगा।
100. जो सर्व प्राप्तियों से सम्पन्न है वही इच्छा मात्रम् अविद्या है
101. दिव्य बुद्धि द्वारा सर्व सिद्धियों को प्राप्त करना ही सिद्धि स्वरूप बनना है
102. फीचर्स में सुख-शान्ति और खुशी की झलक हो तो अनेक आत्माओं का फ्यूचर श्रेष्ठ बना सकते हो
103. अपने आप नेचुरल अटेन्शन हो तो किसी भी प्रकार का टेन्शन आ नहीं सकता
104. बापदादा के दिल की मुबारक लेनी है तो अनेक बातों को न देख अथक सेवा पर उपस्थित रहो
105. स्मृति स्वरूप बनकर हर कर्म करने वाले ही प्रकाश स्तम्भ (लाइट हाउस) बनते हैं
106. फरिश्ता बनना है तो साक्षी हो हर आत्मा का पार्ट देखो और सकाश दो
107. बेहद ड्रामा के हर दृश्य को निश्चित जानकर सदा निश्चिंत रहो
108. अपने मस्तक की मणी द्वारा स्वयं का स्वरूप और श्रेष्ठ मंजिल का साक्षात्कार कराना ही लाइट हाउस बनना है
109. इच्छा मात्रम् अविद्या की स्थिति द्वारा सर्व की इच्छाओं को पूर्ण करना ही कामधेनु बनना है
110. किसी भी बात में मूंझने के बजाए मौज का अनुभव करना ही मस्त योगी बनना है
111. जहाँ स्वच्छता और मधुरता है वहाँ सेवा में सफलता है
112. आत्म निश्चय से अपने संस्कारों को सम्पूर्ण पावन बनाना ही श्रेष्ठ योग है
113. अपनी कर्मेन्द्रियों को योग अग्नि में तपाने वाले ही सम्पूर्ण पावन बनते हैं
114. आपस में स्नेह और सन्तुष्टता सम्पन्न व्यवहार करने वाले ही सफलता मूर्त बनते हैं

115. बाप के साथ-साथ सर्व आत्माओं के स्नेही बनना ही सच्ची सद्भावना है
116. दृष्टि में रहम और शुभ भावना हो तो अभिमान व अपमान की दृष्टि समाप्त हो जायेगी
117. अपने नयनों में बिन्दुरूप बाप को समा लो तो और कोई समा नहीं सकता
118. परमात्म वर्से के अधिकारी बनकर रहो तो अधीनता आ नहीं सकती
119. योग अग्नि से विकारों के बीज को भस्म कर दो तो समय पर धोखा मिल नहीं सकता
120. याद और सेवा का बैलेन्स रखने से ही सर्व की दुआयें मिलती हैं (30/4)
121. सहारेदाता बाप को प्रत्यक्ष कर सबको किनारे लगाओ
122. जो निमार्णचित, अथक और सदा जागती ज्योत हैं - वही विश्व कल्याणकारी हैं
123. अपनी अवस्था को ऐसा शान्त-चित बना लो जो क्रोध का भूत दूर से ही भाग जाए
124. परमार्थ के आधार से व्यवहार को सिद्ध करना - यही योगी का लक्षण है
125. अपने स्वमान की सीट पर सेट रहो तो माया आपके आगे सरेन्डर हो जायेगी
126. बाप को अपना साथी बनाकर माया के खेल को साक्षी होकर देखो
127. "बाप ही संसार है" सदा इस स्मृति में रहना - यही सहजयोग है
128. तपस्वी वह है जो श्रीमत के इशारे प्रमाण सेकण्ड में न्यारा और प्यारा बन जाये
129. दिव्य गुणों के सर्व अलंकारों से सज़े सजाये रहो तो अहंकार आ नहीं सकता
130. ब्राह्मण कुल के दीपक वही बन सकते जिनके स्मृति की ज्योति सदा जगी हुई है
131. प्युरिटी की रायॅल्टी में रहो तो हद की आकर्षणों से न्यारे हो जायेंगे
132. अन्दर की स्थिति का दर्पण चेहरा है, चेहरा कभी खुश्क न हो, खुशी का हो
133. उपराम स्थिति द्वारा उड़ती कला में उड़ते रहो तो कर्म रूपी डाली के बंधन में फँसेंगे नहीं
134. सृष्टि की कयामत के पहले अपनी कमियों और कमजोरियों की कयामत करो
135. साहस को साथी बना लो तो हर कर्म में सफलता मिलती रहेगी
136. ज्ञान रूपी बाणों को बुद्धि रूपी तरकश में भरकर माया को ललकारने वाले ही महावीर योद्धे हैं
137. अपनी श्रेष्ठ वृत्ति से वायुमण्डल को श्रेष्ठ बनाना यही सच्ची सेवा है
138. स्वचिन्तन और प्रभुचिन्तन करो तो व्यर्थ चिंतन स्वत: समाप्त हो जायेगा
139. बुद्धि में ज्ञान रत्नों को ग्रहण करना और कराना ही होलीहंस बनना है
140. जो मन की एकाग्रता द्वारा सर्व सिद्धियां प्राप्त कर लेते हैं वही सिद्धि स्वरूप बनते हैं।
141. ऐसे अचल अडोल बनो जो किसी भी प्रकार की समस्या बुद्धि रूपी पांव को हिला न सके
142. धर्म में स्थित हो कर्म करने वाले ही धर्मात्मा हैं

143. बाप के लव में सदा लीन रहो तो अनेक प्रकार के दु:ख और धोखे से बच जायेंगे
144. हदों को सर्व वंश सहित समाप्त कर दो तो बेहद की बादशाही का नशा रहेगा
145. समय, संकल्प और बोल की एनर्जी को वेस्ट से बेस्ट में चेंज कर दो तो शक्तिशाली बन जायेंगे
146. नये ब्राह्मण जीवन की स्मृति में रहो तो कोई भी पुराना संस्कार इमर्ज नहीं हो सकता
147. सदा अपने स्वमान में रहो तो सर्व का मान मिलता रहेगा
148. जिसे स्वमान का अभिमान नहीं है वही सदा निर्माण है
149. माया को सदा के लिए विदाई देने वाले ही बाप की बधाईयों के पात्र बनते हैं
150. स्वयं को ऐसा दिव्य आइना बनाओ जिसमें बाप ही दिखाई दे तब कहेंगे सच्ची सेवा
151. सर्व खजानों की चाबी - "मेरा बाबा" साथ हो तो कोई भी आकर्षण आकर्षित कर नहीं सकती
152. विजयी आत्मा बनना है तो अटेन्शन और अभ्यास - इसे निज़ी संस्कार बना लो
153. बाप के आज्ञाकारी होकर रहो तो गुप्त दुआयें समय पर मदद करती रहेंगी
154. सफलतामूर्त बनना है तो स्व सेवा और औरों की सेवा साथ-साथ करो
155. स्वयं को निमित्त समझ हर कर्म करो तो न्यारे और प्यारे रहेंगे, मैं पन आ नहीं सकता
156. बुद्धि में हर समय बाप और श्रीमत की स्मृति हो तब कहेंगे दिल से समर्पित आत्मा।
157. बेपरवाह बादशाह वह है जिसके जीवन में निर्माणता और अथॉरिटी का बैलेन्स हो
158. किसी भी परिस्थिति को सहज पार करने का साधन है - एक बल, एक भरोसा
159. नॉलेजफुल वह है जिसका एक भी संकल्प वा बोल व्यर्थ न जाये
160. मन्सा और वाचा दोनों सेवायें साथ-साथ करो तो डबल फल प्राप्त होता रहेगा
161. अपनी हर चलन से बाप का नाम बाला करने वाले ही सच्चे-सच्चे खुदाई खिदमतगार हैं
162. बुद्धि यथार्थ निर्णय तब देगी जब पूरे-पूरे वाइसलेस बनेंगे
163. सही राह पर चलने वाले तथा सबको सही राह दिखाने वाले सच्चे-सच्चे लाइट हाउस हैं
164. बापदादा के साथ ऐसे कम्बाइन्ड रहो जो आप द्वारा दूसरों को बाप की याद आ जाए
165. ऑनेस्ट वह है जो प्रभु पसन्द और विश्व पसन्द है, आराम पसन्द नहीं
166. शान्तिदूत वह है जो तूफान मचाने वालों को भी शान्ति का तोहफा दे
167. मास्टर दु:ख हर्ता बन दु:ख को भी रूहानी सुख में परिवर्तन करना ही सच्ची सेवा है
168. सम्पूर्ण नष्टोमोहा वह है जो मेरे पन के अधिकार का भी त्याग कर दे
169. दूसरों की करेक्शन करने के बजाए बाप से कनेक्शन जोड़ लो तो वरदानों की अनुभूति होती रहेगी
170. अवगुण धारण करने वाली बुद्धि का नाश कर सतोप्रधान दिव्य बुद्धि धारण करो

171. मास्टर सर्वशक्तिमान वह है जो माया के बुदबुदों से डरने के बजाए उनसे खेलने वाले हैं
172. समय के महत्व को जान लो तो सर्व खजानों से सम्पन्न बन जायेंगे
173. सदा बापदादा की छत्रछाया के अन्दर रहो तो विघ्न-विनाशक बन जायेंगे
174. सदा एक के स्नेह में समाये रहो, तो यह मुहब्बत मेहनत को समाप्त कर देगी
175. विस्तार में भी सार को देखने का अभ्यास करो तो स्थिति सदा एकरस रहेगी
176. शुभ भावनाओं की शक्ति दूसरों की व्यर्थ भावनाओं को भी परिवर्तन कर सकती है
177. हर संकल्प में दृढ़ता की महानता हो तो सफलता मिलती रहेगी
178. मास्टर ज्ञान सूर्य बन शक्तियों रूपी किरणों से कमजोरी रूपी किचड़े को भस्म कर दो
179. आज्ञाकारी बच्चे स्वत: आशीर्वाद के पात्र होते हैं, उन्हें आशीर्वाद मांगने की दरकार नहीं।
180. साक्षी रहकर पार्ट बजाने का अभ्यास हो तो टेन्शन से परे स्वत: अटेन्शन में रहेंगे
181. ज्ञान योग की लाइट माइट से सम्पन्न बनो तो किसी भी परिस्थिति को सेकेण्ड में पार कर लेंगे
182. चारों ही सबजेक्ट में स्वमान के अनुभवी स्वरूप बनो तो देह अभिमान नजदीक नहीं आ सकता।
183. मर्यादा के अन्दर चलना माना मर्यादा पुरूषोत्तम बनना।
184. ब्राह्मण जीवन का सांस उमंग-उत्साह है इसलिए किसी भी परिस्थिति में उमंग-उत्साह का प्रेशर कम न हो
185. प्रकृति को दासी बना दो तो उदासी दूर भाग जायेगी
186. विश्व का नव निर्माण करने के लिए अपनी स्थिति निर्मानचित बनाओ।
187. साइलेन्स की पॉवर से निगेटिव को पॉजिटिव में परिवर्तन करो
188. मन को सदा मौज़ में रखना-यही जीवन जीने का कला है
189. नम्रता और धैर्यता की शक्ति से क्रोधाग्नि को शान्त बना दो
190. फरिश्ता बनना है तो अपने सर्व रिश्ते एक प्रभू के साथ जोड़ लो
191. स्व परिवर्तक वह है जिसके अन्दर सदा यह शुभ भावना इमर्ज रहे कि बदला नहीं लेना है बदलकर दिखाना है
192. अपने श्रेष्ठ कर्म से विश्व पिता का नाम बाला करना ही विश्व कल्याणकारी बनना है
193. नयनों में जैसे नूर समाया हुआ है ऐसे बुद्धि में शिव पिता की याद समाई हो
194. ऐसे सहजयोगी बनो जो आपको देखने से ही दूसरों का योग लग जाए
195. सदा ज्ञान सूर्य के सम्मुख रहो तो भाग्य रूपी परछाई आपके साथ है
196. दूसरों को कहकर सिखाने के बजाए करके सिखाने वाले बनो

197. महान आत्मा वह है जिसका हर बोल महावाक्य है

198. जो सदा रूहानियत की स्थिति में रहते हैं वही रूहानी गुलाब हैं

199. खुशनसीब वह है जो सदा खुश रहकर खुशी का खजाना बांटता रहे

200. शक्तिशाली बनना है तो सदा खजानों की स्मृति और सिमरण में रहो

201. अपनी मन्सा द्वारा शान्ति कुण्ड को प्रत्यक्ष करने वाली शान्तप्रिय आत्मा बनो

202. अपकारियों पर भी उपकार करने वाले, निदंक को भी मित्र समझने वाले ही बाप समान हैं

203. सदा ब्रह्मा बाप की भुजाओं में समाये रहो तो सेफ्टी का अनुभव करेंगे

204. सदा एक बाप के श्रेष्ठ संग में रहो तो होलीएस्ट और हाइएस्ट बन जायेंगे

205. शुभ भावना और शुभ कामना द्वारा सूक्ष्म सेवा करने वाले ही महान आत्मा हैं

206. दिव्य जन्मधारी ब्राह्मण वह है जो अपने बोल, संकल्प और कर्म से दिव्यता का अनुभव कराये

207. अन्य आत्माओं के व्यर्थ भाव को श्रेष्ठ भाव में परिवर्तन कर देना ही सच्ची सेवा है

208. याद की तीव्र दौड़ी लगाओ तो बाप के गले का हार, विजयी मणके बन जायेंगे

209. एकाग्रता के दृढ़ संकल्प से सागर के तले में चले जाओ तो अनुभव के हीरे मोती प्राप्त होंगे

210. अलौकिक सुख व मनरस का अनुभव करना है तो मनमनाभव की स्थिति में रहो

211. विघ्न को विघ्न के बजाए खेल समझकर चलो तो खेल में हंसते गाते पास हो जायेंगे

212. अपने शान्ति और सुख के वायबेशन से हर एक को सुख चैन की अनुभूति कराओ तब कहेंगे सच्चे सेवाधारी

213. जो सदा खुशहाल रहते हैं वह स्वंय को और सर्व को प्रिय लगते हैं

214. जो स्मृति स्वरूप रहते हैं उन्हें कोई भी परिस्थिति खेल अनुभव होती है

215. स्वार्थ के बिना सच्चे दिल से सेवा करने वाले ही स्वच्छ आत्मा हैं।

216. मनमनाभव के मन्त्र की सदा स्मृति रहे तो मन का भटकना बन्द हो जायेगा

217. निर्णय करने, परखने और ग्रहण करने की शक्ति को धारण करना ही होलीहंस बनना है

218. सदा गुण रूपी मोती ग्रहण करने वाले होलीहंस बनो, कंकड़ पत्थर लेने वाले नहीं

219. भ्रकुटी की कुटिया में बैठकर तपस्वीमूर्त होकर रहो - यही अन्तर्मुखता है

220. अधिक बोलकर एनर्जी गंवाने के बजाए अन्तर्मुखता के रस के अनुभवी बनो

221. एक-एक वाक्य महावाक्य हो, कोई भी बोल व्यर्थ न जाए तब कहेंगे मास्टर सतगुरू

222. प्यार के सागर में लवलीन रहो तो सदा समीप, समान और सम्पन्न भव के वरदानी बन जायेंगे

223. जो मायावी चतुराई से परे रहते हैं वही बाप को अति प्रिय हैं

224. आगे पीछे सोच समझकर हर कर्म करो तो सफलता प्राप्त होती
225. त्रिकालदर्शा स्थिति में स्थित रहकर निर्णय करो तो हर कर्म में सफलता प्राप्त होगी
226. ज्ञानी तू आत्मा वह है जो ज्ञान के हर राज को समझकर राजयुक्त, युक्तियुक्त और योगयुक्त हो कर्म करे
227. एकरस स्थिति का अनुभव करना है तो एक बाप द्वारा सर्व रसों की अनुभूति करो
228. सच्ची दिल से दाता, विधाता, वरदाता को राज़ी करने वाले ही रूहानी मौज में रहते हैं
229. सदा शुद्ध फीलिंग में रहो तो अशुद्ध फीलिंग का फ्लू पास भी नहीं आ सकता
230. हर कदम में बाप की, ब्राह्मण परिवार की दुआयें लेते रहो तो सदा आगे बढ़ते रहेंगे
231. जिनके पास सरलता का गुण है उनके लिए संगठन में चलना बहुत सहज है
232. भाग्यवान वह है जो सदा भाग्य के गुण गाये, कमजोरियों के नहीं
233. जो रॉयल बाप के रॉयल बच्चे हैं, उनकी हर चलन से रॉयल्टी दिखाई देती है
234. उड़ता पंछी वह है जो देह के सब रिश्तों से मुक्त रह फरिश्ता बनने का पुरूषार्थ करता है
235. अपनी सर्व कमजोरियों से किनारा करना है तो बेहद की वैराग्य वृत्ति को धारण करो
236. स्व-उन्नति का यथार्थ चश्मा पहन लो तो सबकी विशेषतायें ही दिखाई देंगी
237. जिसके हर संकल्प से अनेकों को श्रेष्ठ जीवन बनाने की प्रेरणा प्राप्त हो - वही पुण्यात्मा है
238. स्व-उन्नति का यथार्थ चश्मा पहन लो तो सबकी विशेषतायें ही दिखाई देंगी
239. परोपकारी वह है जो स्व-परिवर्तन से विश्व परिवर्तन करने के निमित्त बनते हैं
240. जो सदा खुशी की खुराक खाते हैं वे सदा तन्दरूस्त और खुशनुम: रहते हैं
241. अशरीरी-पन की एक्सरसाइज और व्यर्थ संकल्पों के भोजन की परहेज करो तो एवरहेल्दी रहेंगे
242. जो दिल और दिमाग से ऑनेस्ट हैं, वही बाप वा परिवार के प्यार के पात्र हैं
243. अपनी विशेषताओं का प्रयोग करो तो हर कदम में प्रगति का अनुभव होगा
244. साक्षी बन न्यारे होकर हर खेल को देखने वाले ही साक्षी दृष्टा हैं
245. सदा सन्तुष्ट और सदा खुश रहने वाले ही खुशनसीब, तीव्र पुरूषार्थी हैं
246. दिल सदा एक दिलाराम में लगी रहे-यही सच्ची तपस्या है
247. बुरे को अच्छे में बदल देना ही ऊंच ब्राह्मणों की श्रेष्ठ शक्ति है
248. शक्तिशाली आत्मा वह है जो जब चाहे तब शीतल स्वरूप और जब चाहे तब ज्वाला रूप धारण कर ले
249. दिलाराम के साथ का अनुभव करना है तो साक्षीपन की स्थिति में रहो
250. हर कदम में कल्याण समझ हर आत्मा को शान्ति की शक्ति का दान देना ही सच्ची सेवा है

251. मन-बुद्धि को दृढ़ता से एकाग्र कर कमजोरियों को भस्म कर दो-तब कहेंगे सच्चे योगी
252. अपने रहमदिल स्वरूप वा दृष्टि से हर आत्मा को परिवर्तन करना ही पुण्यात्मा बनना है
253. असम्भव को सम्भव कर सफलता की अनुभूति करने वाले ही सफलता के सितारे हैं
254. परमात्म प्यार द्वारा जीवन में सदा अतीन्द्रिय सुख व आनंद की अनुभूति करना ही सहजयोग है
255. कर्मयोगी बनना है तो कमल आसनधारी (न्यारे और प्यारे) बनो
256. परिस्थिति रूपी पहाड़ को उड़ती कला के पुरूषार्थ द्वारा पार कर लेना ही उड़ता योगी बनना है
257. ज्ञान स्वरूप बनना है तो बाप और पढ़ाई से समान प्यार हो
258. उड़ती कला का अनुभव करना है तो सदा भाग्य और भाग्य विधाता की स्मृति में रहो
259. महावीर वह है जो हर मुश्किल को सहज कर, पहाड़ को राई व रूई बना दे
260. निर्माणचित के तख्त पर बैठ, जिम्मेवारी का ताज धारण करना ही श्रेष्ठता है
261. कम से कम समय में संकल्पों को मोड़ने और ब्रेक लगाने की युक्ति सीख लो तो बुद्धि की शक्ति व्यर्थ नहीं जा सकती
262. जैसे तपस्वी सदा आसन पर बैठते हैं ऐसे आप एकरस अवस्था के आसन पर विराजमान रहो
263. जो अंगद समान सदा अचल अडोल एकरस रहते हैं, उन्हें माया दुश्मन हिला भी नहीं सकती
264. ज्ञान सूर्य बाप के साथ लकी सितारे वह हैं जो जग से अंधकार को मिटाने वाले हैं, अंधकार में आने वाले नहीं।
265. जो सच्चे पारस बने हैं उनके संग में लोहे सदृश्य आत्मायें भी सोना बन जाती हैं
266. त्यागी आत्मा के हर कर्म वा कदम में सफलता समाई हुई है
267. अपनी स्वस्थिति की शक्ति से परिस्थिति को बदलने वाले कभी परेशान नहीं हो सकते
268. शुद्ध संकल्पों को अपने जीवन का अमूल्य खजाना बना लो तो वही संकल्प उठेंगे जिसमें अपना और दूसरों का कल्याण समाया है
269. अपने संस्कार वा गुणों को सर्व के साथ मिलाकर चलना - यही विशेष आत्माओं की विशेषता है जिनकी एक बाप से सच्ची प्रीत है उन्हें अशरीरी बनना सहज है
270. जिनकी एक बाप से सच्ची प्रीत है उन्हें अशरीरी बनना सहज है
271. सदा ज्ञान सूर्य के सम्मुख रहो तो भाग्य रूपी परछाई आपके साथ रहेगी
272. निंदा-स्तुति, मान-अपमान, हानि-लाभ में समान रहने वाले ही योगी तू आत्मा हैं
273. ईश्वरीय सेवा में खुद को आफर करना ही बापदादा की आफरीन लेना है
274. अपने ख्यालात आलीशान बना लो तो छोटी-छोटी बातों में टाइम वेस्ट नहीं जायेगा
275. जिनके पास सन्तुष्टता का विशेष गुण है उनके पास सर्व गुण स्वत: आते जायेंगे
276. स्व-परिवर्तन के तीव्र पुरूषार्था बच्चों को ही बाप के दुआओं की मुबारक मिलती है
277. फीचर्स में रूहानियत की झलक तब आयेगी जब संकल्प, बोल और कर्म में पवित्रता की धारणा होगी

278. अपनी सर्वशक्तियों को अन्य आत्माओं के प्रति विल करना ही सर्व श्रेष्ठ सेवा है
279. अन्तर्मुखता की विशेषता को धारण कर लो तो सर्व की दुआयें मिलती रहेंगी
280. सेवा में त्रिकालदर्शा का सेन्स और रूहानियत का इसेन्स भरने वाले ही सार्विसबुल हैं
281. ``करावनहार बाप है'' - इस स्मृति से बेफिक्र बादशाह बन उड़ती कला का अनुभव करते चलो
282. ``अगर मगर'' के चक्कर से न्यारे बनना है तो बाप समान शक्तिशाली बनो।
283. जहाँ एकता और एकाग्रता की शक्ति है वहाँ सफलता सहज प्राप्त होती है।
284. क्वेश्चन मार्क का टेढ़ा रास्ता लेने के बजाए कल्याण की बिन्दी लगाना ही कल्याणकारी बनना है
285. ज्ञानी तू आत्मा वह है जो अर्जी डालने के बजाए सदा राज़ी रहे
286. उमंग-उत्साह के पंख साथ हों तो उड़ती कला में उड़ते रहेंगे
287. आज्ञाकारी बनो तो बापदादा के दिल की दुआयें प्राप्त होती रहेंगी
288. सेवा के महत्व को जान कोई न कोई सेवा में बिजी रहने वाले ही आलराउन्ड सेवाधारी हैं
289. एक बाप के श्रेष्ठ संग में रहो तो दूसरा कोई संग प्रभाव नहीं डाल सकता
290. जो बाप के प्यारे हैं, उनका अन्य किसी व्यक्ति वा वैभव से प्यार हो नहीं सकता
291. श्रेष्ठ कर्म का ज्ञान ही श्रेष्ठ भाग्य की लकीर खींचने का कलम है
292. स्वमान में स्थित रहने वाली आत्मा दूसरों को भी मान दे आगे बढ़ाती है
293. मनन शक्ति के अनुभवी बनो तो ज्ञान धन बढता रहेगा
294. बाप से और ईश्वरीय परिवार से जिगरी प्यार हो तो सफलता मिलती रहेगी
295. जिसके पास गम्भीरता की विशेषता है, उन्हें हर कार्य में स्वत: सिद्धि प्राप्त होती है
296. बाप के ऊपर बलिहार जाने का हार पहन लो तो माया से हार नहीं होगी
297. बेफिक्र बादशाह की स्थिति का अनुभव करना है तो मेरे को तेरे में परिवर्तन कर दो
298. अपने साथियों को भी बाप के संग का रंग लगाओ तो उनके संग का रंग आपको नहीं लगेगा
299. जिनके पास ज्ञान का अथाह धन है, उन्हें सम्पन्नता की अनुभूति होती है
300. सत्यता की शक्ति पास हो तो खुशी और शक्ति प्राप्त होती रहेगी
301. पवित्रता की यथार्थ धारणा है तो हर कर्म यथार्थ और युक्तियुक्त होगा
302. बुद्धि से इतने हल्के रहो जो बाप अपनी पलकों पर बिठाकर साथ ले जाये
303. रूहानी शान में रहने वाले कभी हद के मान शान में नहीं आ सकते
304. खुशियों के खान की अधिकारी आत्मा सदा खुशी में रहती और खुशी बांटती है
305. कुल दीपक बन अपने स्मृति की ज्योति से ब्राह्मण कुल का नाम रोशन करो
306. जिनका स्वयं पर व्यक्तिगत अटेन्शन है वे अन्तर्मुखी बनकर फिर बाह्यमुखता में आते हैं
307. जिनका स्वयं पर व्यक्तिगत अटेन्शन है वे अन्तर्मुखी बनकर फिर बाह्यमुखता में आते हैं

308. सदा एकरस स्थिति के आसन पर विराजमान रहो तो अचल-अडोल रहेंगे
309. मास्टर ज्ञान सूर्य बन सर्व को ज्ञान की लाइट माइट देने वाले ही सच्चे सेवाधारी हैं
310. ज्ञानयुक्त रहमदिल बनो तो कमजोरियों से दिल का वैराग्य आयेगा
311. अन्तर्मुखी वह है जो जिस समय चाहे आवाज़ में आये और जिस समय चाहे आवाज़ से परे हो जाए
312. चेहरे पर ख़ुशी की झलक हो तो चेयरफुल चेहरा बोर्ड का काम करेगा
313. जैसे नयनों में नूर समाया हुआ है वैसे बुद्धि में शिव पिता की याद समाई हुई हो
314. नयनों में पवित्रता की झलक हो और मुख पर पवित्रता की मुस्कराहट हो - यही श्रेष्ठ पर्सनैलिटी है
315. स्वभाव के टक्कर से बचने के लिए अपनी बुद्धि, दृष्टि व वाणी को सरल बना दो
316. मेहनत के साथ महानता और रूहानियत का अनुभव करना ही श्रेष्ठता है
317. मायाजीत बनना है तो एक बाप को ही अपना कम्पैनियन बनाओ और उसी की कम्पनी में रहो
318. बीती को पास करके, बापदादा के पास (समीप) रहो तो पास विद आनर बन जायेंगे
319. रूहे गुलाब वह है जो अपनी रूहानी वृत्ति से वायुमण्डल में रूहानियत की खुशबू फैलाता रहे
320. "बाबा" शब्द ही सर्व खजानों की चाबी है, इसे सदा सम्भालकर रखो
321. जीवन में मधुरता का गुण धारण करना ही महानता है
322. मनन शक्ति के आधार से ज्ञान खजाने को अपना बना लो तो विघ्न विदाई ले लेंगे
323. अपने श्रेष्ठ संकल्पों की एकाग्रता द्वारा, अन्य आत्माओं की भटकती हुई बुद्धि को एकाग्र कर देना ही सच्ची सेवा है
324. अपने ऊपर राज्य करने वाले स्वराज अधिकारी बनो, साथियों पर राज्य करने वाले नहीं
325. शुभ संकल्प और दिव्य बुद्धि के यत्र द्वारा तीव्रगति की उड़ान भरते रहो
326. सदा हर्षित रहना है तो विश्व ड्रामा की हर सीन को साक्षी होकर देखो
327. प्योरिटी की रॉयल्टी का अनुभव करना और कराना ही रॉयल आत्मा की निशानी है
328. अपने चलन और चेहरे से सत्यता की सभ्यता का अनुभव कराना ही श्रेष्ठता है
329. बाबा के मिलन की और सर्व प्राप्तियों की मौज में रहना ही संगमयुग के विशेषता है
330. सन्तुष्टता और सरलता का सन्तुलन रखना ही श्रेष्ठ आत्मा की निशानी है
331. अनुभवों की अथॉरिटी बनो तो माया के भिन्न-भिन्न रॉयल रूपों से धोखा नहीं खायेंगे
332. पवित्रता की गहन धारणा से ही अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति होती है
333. जिनकी दिल बड़ी है उनके भण्डारे सदा भरपूर रहते हैं
334. परिपक्व बनने के लिए परीक्षाओं को गुड-साइन समझ हर्षित रहो
335. एक बाप के फ़रमान पर चलते चलो तो सारी विश्व आप पर स्वतः कुर्बान जायेगी
336. भाग्यविधाता बाप को अपना सर्व सम्बन्धी बना लो तो सर्व प्राप्तियों से सम्पन्न बन जायेंगे

337. सेवा का फल और बल प्राप्त करने वाले ही शक्तिशाली हैं
338. सुखदाता बाप के सुख स्वरूप बच्चे बनकर रहो तो दुःख की लहर आ नहीं सकती
339. परमात्म प्यार के अनुभवी बनो तो कोई भी रुकावट रोक नहीं सकती
340. अपनी सेवा को बाप के आगे अर्पण कर दो तो सफलता हुई पड़ी है
341. बापदादा के स्नेह की दुआओं में पलते, उड़ते चलो – यही श्रेष्ठ पुरुषार्थ है
342. अपने सन्तुष्ट और खुशनुमः जीवन से सेवा करो तब कहेंगे सच्चे सेवाधारी
343. बापदादा से अटूट प्यार हो तो ईश्वरीय मर्यादाओं पर चलना सहज अनुभव करेंगे
344. भाग्यवान आत्मा वह है जिस पर बापदादा के स्नेह की छत्रछाया है
345. सदा बाप की लाइट माइट के अन्दर रहो तो माया आपके आगे ठहर नहीं सकती
346. जिनके साथ हजार भुजाओं वाला बाप है वे कभी दिलशिकस्त नहीं हो सकते
347. कर्मभोग का वर्णन करने के बजाए कर्मयोग की स्थिति का वर्णन करो
348. ``आप और बाप'' दोनों ऐसा कम्बाइन्ड रहो जो तीसरा कोई अलग कर न सके
349. अपने मन बुद्धि संस्कारों पर सम्पूर्ण राज्य करने वाले ही स्वराज्य अधिकारी हैं
350. निराकारी, निरंहकारी स्थिति में स्थित रहकर, विश्व को प्रकाशित करने वाले ही चैतन्य दीपक हैं
351. हार्ड वर्कर के साथ-साथ स्थिति में भी सदा हार्ड (मज़बूत) बनो
352. निःस्वार्थ और निर्विकल्प स्थिति से सेवा करो तब सफलता मिलेगी
353. अपनी अव्यक्त स्थिति से अव्यक्त आनन्द, अव्यक्त स्नेह व अव्यक्त शक्ति प्राप्त कर सकते हो
354. जो होलीहंस हैं उनकी विशेषता स्वच्छता है,स्वच्छ बन सबको स्वच्छ बनाना ही उनकी सेवा है
355. जो मन्सा महादानी हैं वह कभी भी संकल्पों के वश नहीं हो सकते
356. ज्ञानी और योगी तू आत्मा का प्रैक्टिकल स्वरूप नम्रता और निर्भयता है
357. हरेक की राय को सम्मान देना ही सम्मान लेना है, सम्मान देने वाले अपमान नहीं कर सकते
358. जिनके पास सर्व शक्तियों का स्टॉक है, प्रकृति उनकी दासी बन जाती है
359. अनुभवों की सम्पन्नता द्वारा सदा उमंग-उल्लास में रहने वाले मा. आलमाइटी अथॉरिटी भव
360. अमृतवेला विशेष प्रभु पालना की वेला है, इसका महत्व जान पूरा लाभ लो
361. सदा खुश रहना, खुशी का खजाना बांटना और सबमें खुशी की लहर फैलाना यही श्रेष्ठ सेवा है
362. जब सरल स्वभाव, सरल बोल, सरलता सम्पन्न कर्म हों तब बाप का नाम बाला कर सकेंगे
363. बिगड़े हुए कार्य को, बिगड़े हुए संस्कारों को, बिगड़े हुए मूड को शुभ भावना से ठीक कर देना – यही श्रेष्ठ सेवा है
364. जो सर्व शक्तियों रूपी किरणें चारों ओर फैलाते हैं वही मास्टर ज्ञान-सूर्य हैं

365. दिव्य बुद्धि ही साइलेन्स की शक्ति का आधार है

366. स्वयं को बदलने की भावना हो तो संगठन में सफलता मिलती रहेगी